

तिगुह्नु चैव MBh. 14, 278. नुषते पर्वतश्रेष्ठमृषयः पर्वसंधिषु 3, 11648. तं तादृशं श्रीनुषते समया 5, 1075. रथं च नुषते शुभम् *besteigen* BHATT. 14, 95. *hetmsuchen*: न ग्लानिर्न च वैल्लव्यं न भयं न च संभयः ॥ कदाचिञ्जुषते पार्थम् । MBh. 3, 11081. 11695. नुष्ठ *besucht, bewohnt*: ऋषिनुष्ठजल AK. 3, 4, 89. किंनैरप्सरोभिश्च क्रीडिद्विनुष्ठकन्दरः Buāg. P. 8, 2, 5. (सभाम्) नुष्ठां मुनिगणैः MBh. 2, 277. अमरराजनुष्ठात्पुण्यालोकात् 1, 3569. (आश्रममण्डलम्) नानामृगणैर्नुष्ठम् 3, 2464. R. 2, 56, 33. 3, 15, 44. नुष्ठं तत्प्राविशच्छत्र्या रम्यं रामनिवेशनम् 2, 32, 3. वायुनुष्ठेन वै पथा *auf einem Wege, über den der Wind hinfuhr*, HARIV. 8984. *heimgesucht*: उपद्रवैः Suçr. 1, 253, 19. अपीनसेन 2, 369, 11. 310, 4. 374, 1. मारुतरेगं 4, 161, 2. कृमिं 216, 1. 224, 20. *umgeben von*: महाब्रह्मसमूकनुष्ठ (राजन्) BHATT. 1, 4. पतत्रिकोष्णानि रक्षांसि 5, 80. *versehen mit, verbunden mit*: पयोधैरा — रत्ननुष्ठै R. 3, 52, 24. तप्तभरणनुष्ठाङ्गी 58, 19. शालायां नुष्ठायां माल्यदीपकैः Buāg. P. 8, 9, 16. (विमानम्) मरुत्कारकतस्थल्या नुष्ठं विद्रुमवेदिभिः 3, 23, 17. 19. अद्यासनं राजकिरीटनुष्ठम् 1, 19, 20. राजप्रभावनुष्ठाम् — गुर्वी धर्मधुरम् R. 2, 2, 7. — 5) *Belieben haben zu Etwas (dat.), sich entschliessen zu*: अदिञ्जुषोष वृषभं यज्ञेयै RV. 4, 24, 5. जोषयद्दीमसुर्या सच्यै 1, 167, 5. यथा बहूनां मध्यात्साधवे कर्मणे नुषते ÇAT. Br. 3, 6, 4, 7. — 6) *Jmd zu Etwas beattimmen, erwählen zu*: तं त्वा नुषामहे देव वनस्पते देववृष्यायै VS. 5, 42. TS. 6, 3, 3, 1. 2. ÇAT. Br. 3, 6, 4, 8. — 7) *Jmd (loc.) gefallen*: नाब्रह्मा यज्ञ ऋधुजोषति वे RV. 10, 103, 8. — *caus.* 1) *med. gern haben, lieben; sich zärtlich erweisen gegen (acc.), liebkosen*: ब्रह्मप्रियं जोषयते वरा इव RV. 1, 83, 2. जोषयति गिरिश नः । वधूर्यारिव योषयाम् 3, 52, 3. भूरि नाम वन्दमानो दधाति पिता वंसे यदि तज्जोषयति 5, 3, 10. उभे भूरे जोषयते न मेने 1, 95, 6. *Gefallen finden an, zufrieden sein mit, guthelssen*: जोषयते तदा भोष्यं प्राप्तमागतमस्पृहः MBh. 14, 1289. *act.*: जोषयतेसर्वकर्माणि BHAG. 3, 26. — 2) *med. billigen, erwählen*: देवपजनम् ÇAT. Br. 3, 1, 1, 1. पूषम् 6, 4, 4. जोषित 12, 5, 3, 1. TS. 3, 1, 2, 4. — *Vgl.* भञ्ज् und सेव्.

— अनु *Jmd aufsuchen*: अनु मा श्रीनुषतामनु यशः ÇĀṆKH. GRH. 6, 5.

— अभि 1) *sich belieben lassen, gern haben*: कस्य हेतुर्पुंसं नुषापो अभि सोममूर्धः RV. 4, 23, 1. नमो जगुन्वाँ अभि यञ्जुषोषत् 4. — 2) *ausfeuchen, besuchen*: (उदकम्) अनिलैर्नभिनुष्ठम् Suçr. 1, 170, 20. अयाभिनुष्ठः MBh. 5, 1040. HARIV. 13088. Buāg. P. 5, 24, 13.

— अत्र *besuchen*: सदावनुष्ठं नृपं नुष्कान्यया (d. i. गङ्गाया) *besucht, durchströmt* MBh. 13, 645.

— समा *Belieben haben zu Etwas (dat.), sich entschliessen zu*: समाजुष्यात्मुक्तो अयेसे ऽय (शिवः) HARIV. 7431.

— उप s. उपजोषम्.

— निष्, *partic.* निनुष्ठ *besucht, bewohnt* Buāg. P. 4, 6, 21.

— प्र, *partic.* प्रनुष्ठ *Gefallen findend an (loc.)*: इन्द्रियाणि विषयेषु प्रनुष्ठानि M. 2, 96.

— प्रति 1) *Jmd Liebe bezeugen, sich zärtlich erweisen*: उक्थेषु कारो प्रति नो नुषस्व RV. 3, 33, 8. पितेव पुत्रान्प्रति नो नुषस्व 7, 54, 2. प्रति देवाँ अंनुषत् प्रयेभिः 9, 92, 1. — 2) *gern annehmen, sich freuen an, zufrieden sein mit*: यत्नेमहे प्रति तत्रो नुषस्व RV. 7, 54, 1. प्रति न स्तोमं त्रष्टा नुषते 34, 21. 95, 5. — *caus.* *Jmd schmeicheln, liebkosen*: प्रतीची सिंहे प्रति जोषयते RV. 4, 93, 5.

— सम्, *partic.* संनुष्ठ *besucht, bewohnt, erfüllt*: धूमप्राशित्रप्यैः क्षीरपैश्च

संनुष्ठम् MBh. 13, 646. क्रव्यादगणं 7, 899. मतभमरं 3, 14862. (सभाम्) ब्रह्मर्षिगणसंनुष्ठाम् Buāg. P. 8, 18, 18.

2. नुष् (= 1. नुष् 1) *Gefallen findend an, hängend an, sich hängend*; mit dem acc.: सारं नुषां चरणयोरुपगयातौ नः Buāg. P. 7, 6, 25. am Ende eines comp.: मुकुन्दस्य पदारविन्दयो रजोनुषः — जनाः 4, 9, 36. अन्तरनुषामपि चित्ततन्वोः 3, 13, 43. तमो 4, 24, 52. सत्त्वरजस्तमो 8, 16, 14. कतिपयनिमेषस्थितिं ÇĀNTIC. 2, 9, 4, 14. KATHĀ. 19, 30. — 2) *aufsuchend, sich hinbegebend zu, auf*: नानापथं MADHUS. in Ind. St. 1, 24, 1. ककुब्जुषः Buāg. P. 2, 7, 25. — *Vgl.* सनुष्.

3. नुष्, जोषति und जोषयति *erwägen oder verletzen (परितर्कणः)*: *befriedigen (परितर्पणः)*; *vgl.* 1. नुष्) DĀITUP. 34, 28.

नुष् (von 1. नुष्) s. अल्लनुष्.

नुषार्णं m. Bez. eines Opferspruchs, der das Wort नुषाण (partic. von 1. नुष्) enthält, ÇAT. Br. 4, 6, 3, 27. 43 (vgl. 5, 3, 23). ÇĀṆKH. Çr. 4, 8, 9.

नुष्क m. N. pr. eines der 3 Turushka-Könige in Kāçmitra RĀĀ-TAR. 1, 168. fg. LIA. II, 411. fg. ०पुर n. N. pr. einer von Ġushka gegründeten Stadt RĀĀ-TAR. a. a. O.

नुष्कक m. = पूष *Erbsenbrühe* ÇĀṆKH. im ÇKDr.

नुष्ठ (partic. von 1. नुष्) in der Bed. des Präsens KĀR. zu P. 3, 2, 188. = सेवित MED. 1. 14. n. = उच्छिष्ट *die Ueberbleibsel einer Mahlzeit* ebend. — *Vgl.* u. 1. नुष्.

नुष्ठि (von 1. नुष्) f. *Liebe, Liebeserweisung; Gunst; Befriedigung*: यस्य नुष्ठिं सोमिनः कामयन्ते AV. 4, 24, 5. नुष्ठा भवतु नुष्ठयः RV. 1, 10, 12. नुष्ठिरसि नुषस्व नो नुष्ठा नो ऽसि नुष्ठिं तं गमेयम् TS. 4, 6, 2, 2. ÇĀṆKH. Çr. 4, 12, 5. LĪTJ. 3, 6, 3. तपोनुष्ठिं मातरिश्वा जगाम RV. 10, 114, 1. नुष्ठी नरो ब्रह्मणा वः पितृषामन्तमव्ययम् 7, 33, 4. — *Vgl.* ऋ०, क्व०.

नुष्प्य *partic. fut. pass. von 1. नुष्* P. 3, 1, 109. VOP. 26, 17. 18. — *Vgl.* जोष्य.

नुहु Nebenform von 2. नुह् COLEBR. u. LOIS. zu AK. 2, 7, 24.

नुहुराण s. u. नुहुराण.

नुहुराणं Uq. 2, 88. m. *der Mond* Sch. — *Vgl.* न्हुर und नुहुराण.

नुहुवाण m. 1) *Feuer* H. an. 4, 77. MED. n. 95. नुहुवाण TĀIK. 1, 1, 66. — 2) *ein dienstthuender Priester (अध्वर्यु)* H. a. u. MED. — *Liesse sich in नुह् + वाण dessen Pfeile die Zunge (Flamme) oder der Opferlöffel ist zerlegen; aber wahrscheinlich nur eine aus नुहुराण entstellte Form.* *Vgl.* नुहुवान, नुहुराण, नुहुवत्.

नुहुवान (partic. von नुहु) m. 1) *Feuer*. — 2) *Baum*. — 3) *ein hartherziger Mensch* UṆĀDIVA. im SĀṆKSHIPTAS. ÇKDr. — *Vgl.* नुहुवाण, नुहुराण, नुहुवत्.

1. नुह् (von न्हा; vgl. निह्) 1) f. *Zunge*: रुद्रायार्कं नुह्वाइं समञ्जे RV. 1, 61, 5. इमा गिरः सनाद्रान्भयो नुह्वा नुह्वामि 2, 27, 1. अन्नममिं नुह्वा वचस्या मधुपृचं धनसा जोह्वामि 10, 6. Namentlich *die Zunge oder die Zungen Agni's, die Flammen* (vgl. निह्वा): अग्ने मन्त्रयो नुह्वा यजस्व 1, 76, 5. 143, 3. 4, 4, 2. उत्तानामूर्धो अथयञ्जुह्वमिः 5, 1, 3. 1, 58, 4. 3, 31, 8. 6, 11, 2. 66, 10. 7, 3, 4. u. s. w. मन्त्रो होता स नुह्वाइं यज्ञिष्ठः 10, 6, 4. *die 7 Zungen des A.*: होतारं सत् नुह्वेइं यज्ञिष्ठं यं वायते वृषते अध्वर्युं 1, 58, 7. — 2) *personif. ist Ġuhū die Gemahlin Brahman's (die Göttin der Rede, vgl. Sarasvatī); thr wird in RV. ANUKA. das Lied 10, 109 zugeschrie-*